

डॉ. डेनियल जे. ट्रेयर, नीतिवचन, सत्र 1, दो तरीके

© 2024 डेनियल ट्रेयर और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेनियल जे. ट्रेयर ईसाई जीवन के लिए नीतिवचन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र संख्या एक है, नीतिवचन 1-9, दो तरीके।

नमस्ते, मैं डैन ट्रेयर हूँ। मैं व्हीटन कॉलेज और इसके ग्रेजुएट स्कूल में धर्मशास्त्र का नोडलर प्रोफेसर हूँ। नीतिवचन पुस्तक पर व्याख्यानों की एक श्रृंखला देना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। उनके लिए मेरा अपना शीर्षक, जैसा कि आप जल्द ही स्क्रीन पर देखेंगे, ईसाई जीवन के लिए नीतिवचन पढ़ना है।

मैं इस खंड से सामग्री का पुनः उपयोग करने के अवसर के लिए बेकर पब्लिशिंग ग्रुप का आभारी हूँ, जिसे मैंने 2011 में बाइबल पर ब्रेजोस थियोलॉजिकल कमेंट्री नामक श्रृंखला के लिए नीतिवचन और एक्लेसिएस्टेस पर प्रकाशित किया था। अब, कई वफादार पुराने नियम के विद्वान एक व्यवस्थित धर्मशास्त्री के रूप में मेरी तुलना में नीतिवचन का अधिक तकनीकी रूप से सक्षम और व्यापक बाइबिल धर्मशास्त्र तैयार कर सकते हैं। इसलिए, मैंने जो काम किया है, उसमें मैं टेम्पर लॉन्गमैन और ब्रूस वाल्टके जैसे लोगों और कई अन्य इंजील पुराने नियम के विद्वानों की बेहतरीन टिप्पणियों की व्याख्यात्मक मदद पर बहुत अधिक निर्भर करता हूँ, जिनकी हिब्रू में तकनीकी क्षमता और कई अन्य मामलों में तकनीकी क्षमता मुझसे कहीं अधिक है।

इन व्याख्यानों में, मैं उनके द्वारा किए गए जटिल कार्य की नकल करने का प्रयास नहीं करने जा रहा हूँ। एक व्यवस्थित धर्मशास्त्री के रूप में, मैं वास्तव में केवल एक विशेष फोकस के साथ उनके काम को संश्लेषित और पूरक कर सकता हूँ। ईसाई धर्मग्रंथों के संपूर्ण सिद्धांत और यीशु मसीह में प्रकट त्रिएक ईश्वर के प्रति हमारी भक्ति के प्रकाश में ईसाई विश्वासियों को नीतिवचन कैसे पढ़ना चाहिए? क्या हमें नीतिवचनों को केवल व्यावहारिक ज्ञान की एकत्रित डली के रूप में मानना चाहिए, जो कभी-कभी विभिन्न संस्कृतियों से उधार ली जाती है या उनके साथ संरेखित होती है? या क्या हमें अपने पाठ को नैतिक गठन, इज़राइल के लोगों के निर्माता भगवान की सेवा करने की सीख के संदर्भ में अधिक स्पष्ट रूप से समझना चाहिए? या क्या नीतिवचन ईसाई चर्च के भीतर हमारे आध्यात्मिक गठन में और भी योगदान दे सकते हैं, एक मानव समुदाय जिसे अंततः वफादार इज़राइली, यीशु मसीह का अनुसरण करके नवीनीकृत किया जा रहा है? क्या नीतिवचनों को ईसाई तरीके से जोड़ने से अभी भी इसके मूल अर्थ का सम्मान किया जा सकता है? मुझे ऐसा लगता है, और हम इन व्याख्यानों में इसका पता लगाने का प्रयास करने जा रहे हैं।

निम्नलिखित व्याख्यान इस प्रकार के प्रश्नों का चार-भागीय उत्तर प्रस्तुत करेंगे। सबसे पहले, नीतिवचन 1 से 9 तक का लंबा परिचय दो तरीकों के विषय पर प्रकाश डालता है, निर्णय का चल रहा नाटक, बड़ी तस्वीर, और निर्णय, छोटी तस्वीरें, एक तरफ ज्ञान का पीछा करना और दूसरी तरफ मूर्खता का अभ्यास करना। इस व्याख्यान में हमारा फोकस इसी पर होगा।

दूसरा, नीतिवचन 10 से 29 तक की छोटी कहावतें सद्गुणी चरित्र को चित्रित करती हैं, एक ऐसा चित्रण जिसे हम ईसाई परंपरा के प्रमुख और धार्मिक गुणों के संदर्भ में संक्षेप में प्रस्तुत कर सकते

हैं। तीसरा, इसके विपरीत, नीतिवचन 10 से 29 में छोटी नीतिवचन भी पूंजीगत बुराइयों को चित्रित करते हैं जिन पर बुद्धिमान लोग काबू पाते हैं, तथाकथित सात घातक पापों के खतरे। चौथा, नीतिवचन 30 और 31 के अंतिम शब्द पुस्तक की पैतृक शिक्षाशास्त्र को ईश्वर की शिक्षाशास्त्र से जोड़ते हैं, जो ज्ञान में वाचा के लोगों के गठन को बढ़ावा देते हैं।

यह शैक्षणिक फोकस एक अतिरिक्त विषय पर प्रकाश डालता है जिसका अध्ययन हम उस चौथे व्याख्यान में करेंगे। नीतिवचन सुनने और बोलने को हमारे चरित्र की महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति और इसके स्वस्थ विकास में महत्वपूर्ण योगदान के रूप में प्राथमिकता देते हैं। अब, नीतिवचनों तक पहुंचने के लिए बुनियादी ढांचे पर, नीतिवचन 1 से 9 तक नीतिवचन 1 से 9 में बताए गए दो तरीके हैं। रोलैंड मर्फी ने सुझाव दिया है कि नीतिवचन की व्याख्या के इतिहास में वह शामिल है जिसे वह सौम्य उपेक्षा कहते हैं, नीतिवचन एक प्रवर्तक से कुछ अधिक की सेवा करते हैं। नैतिक मार्गदर्शन।

आखिरकार, 16वीं शताब्दी के फिलिप मेलान्कथॉन के विभिन्न खंडों के दिलचस्प अपवाद को छोड़कर, कुछ शास्त्रीय टिप्पणियाँ बची हैं, और जब इज़राइल की नैतिकता की बात आती है तो समकालीन विद्वान अक्सर टोरा को प्राथमिकता देते हैं। हाल के दशकों तक नीतिवचनों पर आधुनिक टिप्पणियाँ भी अपेक्षाकृत कम थीं। फिर भी इसकी उपेक्षा के बारे में इन दावों में सच्चाई के अंश के बावजूद, नीतिवचन ने शुरू से ही ईसाई विचार को प्रभावित किया है।

विशेष रूप से, डिडाचे, बारह प्रेरितों की तथाकथित शिक्षा, दूसरी शताब्दी की शुरुआत से ही चर्च संबंधी शिक्षा प्रदान करती है, संभवतः पहली शताब्दी से भी। यह मैनुअल इस प्रकार शुरू होता है, उद्धरण, दो तरीके हैं, एक जीवन का और एक मृत्यु का, और इन दोनों तरीकों के बीच बहुत अंतर है, अंत उद्धरण। डिडाचे में आगामी निर्देश चरित्र-चालित है, जो नीतिवचन और दो तरीकों के संबंध में व्यापक पुराने नियम के पैटर्न के साथ प्रतिध्वनित होता है।

उदाहरण के लिए, भजन 1 धर्मियों के मार्ग और दुष्टों के मार्ग की तुलना करता है। यिर्मयाह 21.8 जीवन के मार्ग और मृत्यु के मार्ग को एक दूसरे से जोड़ता है। व्यवस्थाविवरण में आशीर्वाद और शाप की संरचना, उदाहरण के लिए, अध्याय 11, छंद 26 से 28 में, इसी तरह द्विआधारी है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक के अनुसार, यीशु ने मैथ्यू 7, 13 और 14 में विनाश के व्यापक मार्ग की तुलना जीवन के संकीर्ण मार्ग से की है, जिससे उनके अनुयायियों ने अपने आंदोलन को मार्ग करार दिया। डिडाचे की ओर बढ़ते हुए, गलातियों 5, 17 से 25 आत्मा बनाम मांस का द्वंद्व प्रस्तुत करता है। मांस का तात्पर्य शरीर से नहीं है जैसे कि यह स्वाभाविक रूप से बुरा है, बल्कि शरीर में कमजोर, सांसारिक, पापी अस्तित्व से संबंधित है।

और आत्मा बनाम मांस के इस द्वंद्व में, हमारे पास गुणों और अवगुणों की एक सूची है। हमारे पास ईश्वर के निर्णय और मोक्ष के निर्णायक भविष्य के साथ एक युगांतशास्त्रीय प्रोत्साहन है जो अभी ईसाई जीवन के लिए प्रोत्साहन को आकार दे रहा है। डिडाचे द्वारा इन बाइबिल विषयों को अपनाने के बाद, कुछ सदियों बाद बोथियस का 'कंसोलेशन ऑफ फिलॉसफी' इस बाइबिल के

दो तरीकों के लिए व्यापक ईसाई समानता का एक और उदाहरण प्रदान करता है। परंपरा, जबकि बोथियस इसके द्वारा उठाए गए कुछ धार्मिक और दार्शनिक प्रश्नों पर भी विचार करता है।

हमें अधिक वैचारिक सिद्धांतों के अंतिम विकास या प्राकृतिक धर्मशास्त्र पर समस्याग्रस्त बहस को हमें गुमराह नहीं करने देना चाहिए। हमें निर्मित प्रकृति के धर्मशास्त्र की आवश्यकता है। नीतिवचन में, हम ईश्वर के अनुबंधित लोगों के लिए बाइबिल की अनुमति पाते हैं कि वे सृजित प्रकृति और बुतपरस्त संस्कृतियों को बुद्धिमानि से संलग्न करें, हमेशा स्पष्ट रूप से मुक्तिदायक अनुग्रह का उल्लेख करने की आवश्यकता के बिना।

नीतिवचन से सीखे बिना, जब हम ईसाई विश्वदृष्टि के भीतर सृजन की अच्छाई को पुनः प्राप्त करना चाहते हैं, तो हम बाइबिल के सुसमाचार के साथ सांस्कृतिक जुड़ाव को एकीकृत करने में विफल हो सकते हैं। या हम माता-पिता की सलाह या अन्य दैवीय रूप से गारंटीकृत स्व-सहायता के स्रोत के रूप में नैतिक व्यावहारिकता के साथ कभी-कभार और बेतरतीब ढंग से नीतिवचन को अपनाने में पड़ सकते हैं। जब नीतिवचन का धार्मिक ढाँचा इस प्रकार विकृत या उपेक्षित हो जाता है, तो या तो ईश्वर स्वचालित रूप से उन लोगों को आशीर्वाद देता है जो सही काम करते हैं, या फिर ईसाई स्मिथ द्वारा वर्णित नैतिक चिकित्सीय देवतावाद का ईश्वर हमारी संस्कृति, यहाँ तक कि इंगील संस्कृति में भी बड़े पैमाने पर चल रहा है।

नैतिकतावादी उपचारात्मक देववाद का यह भगवान, जो अच्छे लोगों को आशीर्वाद देता है, स्वयं की मदद करने वाले लोगों के लिए उदारता की पेशकश करता है। जब नीतिवचन को इस तरह से पढ़ा जाता है, तो हम इसे गहराई से गलत समझते हैं और हम उस ज्ञान से चूक जाते हैं जो भगवान के पास हमारे लिए है। जैसे-जैसे हम अब पाठ की ओर मुड़ते हैं, हमें निश्चित रूप से एक नैतिक फोकस मिलेगा और हमें व्यावहारिक ज्ञान मिलेगा।

लेकिन वास्तव में जीवन जीने के दो तरीके दांव पर हैं जो अल्पकालिक व्यक्तिगत गारंटी प्रदान करने के बजाय दीर्घकालिक सांप्रदायिक चरित्र को आकार देते हैं। नीतिवचन 1.1-9.18 की संरचना ही ज्ञान की ओर पथ पर आगे बढ़ने को बढ़ावा देती है। नीतिवचन 1-9 में माता-पिता के विस्तारित भाषण और ज्ञान के प्रतीक शामिल हैं, जबकि बाकी किताब में छोटी, अधिक परिचित, आमतौर पर दो-पंक्ति वाली कहावतें एकत्र की गई हैं।

नीतिवचन 1-9 के भीतर, भाषणों की संरचना, मुझे लगता है, अपेक्षाकृत स्पष्ट है। इंटरल्यूड्स में अध्याय 1 श्लोक 20-33 और अध्याय 8 श्लोक 1-36 में व्यक्तिगत रूप से बोलने का ज्ञान है। व्यक्तिगत रूप से ज्ञान के उन भाषणों के बीच, माता-पिता के व्याख्यान मेरे बच्चे या बच्चों को उस वाक्यांश के साथ संबोधित करते हैं जो छंदों की एक पूरी श्रृंखला में आते हैं, 2-1, 3-1, 3-11, 3-21, फिर 4-1, 10 में -20, अध्याय 5 श्लोक 1 और श्लोक 7 में, अध्याय 6 श्लोक 1, 3 और 20, अध्याय 7 श्लोक 1 और 24, और फिर अध्याय 8 श्लोक 32 में।

उद्बोधन के ये सभी रूप आवश्यक रूप से समान रूप से लागू नहीं होते हैं, जैसे कि वे बड़ी तस्वीर वाले संरचनात्मक विभाजनों को इंगित करते हैं, लेकिन वे एक व्यापक पैटर्न स्थापित करते हैं जो मुझे लगता है कि हमें मानक अध्याय प्रभागों का उपयोग करके नीतिवचन 2-9 को

विषयगत रूप से पढ़ने की अनुमति देता है। नीतिवचन 2, 3, 4, और 6 माता-पिता के भाषण हैं जो बुद्धि की प्रशंसा करते हैं, और वे अध्याय 2 में उसके प्रस्ताव को स्वीकार करने से लेकर अध्याय 3 में उसे पकड़ने तक, अध्याय 4 में इस पैतृक पथ के प्रति प्रतिबद्धता बनाए रखने तक अपना ध्यान केंद्रित करते हैं। अध्याय 6 में विभिन्न उलझनों से बचना। बीच-बीच में, नीतिवचन 5 और 7 मूर्खता के विरुद्ध माता-पिता की चेतावनियाँ जोड़ते हैं। अध्याय 4 के अंत में जिस खतरे से व्यक्ति को अपने हृदय की रक्षा करने की आवश्यकता है वह व्यभिचार है, अध्याय 5। विवाहित हों या नहीं, युवा लोगों को महिला ज्ञान के बजाय मोहक आवाजें सुनने से गंभीर आध्यात्मिक खतरों का सामना करना पड़ता है, अध्याय 7 नीतिवचन 8 में बोलता है। नीतिवचन 9 श्लोक 1-6 में महिला ज्ञान और श्लोक 13-18 में मूर्खता के विरोधी निमंत्रणों का सारांश संस्करण प्रस्तुत करता है, इस प्रकार श्लोक 7-12 में ज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक एकल-दिमाग के बारे में सिद्धांतों को तैयार करता है।

अब निःसंदेह यह नाटकीय आंदोलन, जिसका मैं अध्याय 1-9 में ज्ञान की खोज में सुझाव दे रहा हूँ, एक बहुत व्यापक, व्यापक स्तर पर घटित होता है जिसके भीतर कई राजमार्ग और उपमार्ग हैं। हालाँकि, अध्यायों में उन असंख्य उपकथाओं के उतार-चढ़ाव आमतौर पर दो तरीकों के मूल विषय पर भिन्नताएँ हैं, एक जीवन की ओर ले जाता है और दूसरा मृत्यु की ओर। प्रस्तावना के लिए।

नीतिवचन 1-1 बाद की सामग्री को राजा सुलैमान के साथ जोड़ता है। निश्चित रूप से प्रत्येक कहावत का लेखक नहीं, फिर भी वह उनकी रचना और संग्रह का केंद्र है। डेविड के पुत्र और इज़राइल के राजा के रूप में, सुलैमान इन कहावतों को इज़राइल के मुक्ति इतिहास से जोड़ता है, भले ही परोक्ष रूप से।

यह संबंध कुछ छंदों में और अधिक स्पष्ट हो जाता है, जहां यहोवा का भय, प्रभु का भय, किसी ईश्वर या सबसे परिपूर्ण प्राणी का नहीं, बल्कि इसराइल के वाचा ईश्वर का भय, अनुसरण में प्रवेश के लिए संकीर्ण द्वार के रूप में खड़ा है ज्ञान का। अध्याय 1 पद 7. सुलैमान का नाम उसे शांति से जोड़ता है, जैसा कि प्रारंभिक चर्च के हिप्पोलिटस बताते हैं। न केवल युद्ध से बचने के नकारात्मक अर्थ में, बल्कि फलने-फूलने, ईश्वर, ईश्वर के लोगों और बाकी सृष्टि के साथ सद्भाव का आनंद लेने के समग्र अर्थ में।

इस शालोम के लिए ज्ञान की मध्यस्थता इज़राइल के अधिकारियों के माध्यम से की जाती है, जिनसे अंततः यीशु मसीहा को अपनी वंशावली का पता चलेगा। नीतिवचनों का उद्देश्य अध्याय 1 श्लोक 2-6 में प्रकट होता है, ज्ञान के लिए बार-बार शब्दों को एक-दूसरे के ऊपर रखना, और इस प्रक्रिया में कई धार्मिक पाठों को व्यक्त करना। पहला, ज्ञान न केवल व्यक्तिगत है बल्कि सामाजिक भी है।

नीतिवचन निर्देश से प्राप्त अंतर्दृष्टि बुद्धिमान व्यवहार को सक्षम बनाती है और न्याय को बढ़ावा देती है, श्लोक 3। नीतिवचन न केवल सीखने या निर्देश प्राप्त करने में सक्षम बनाते हैं बल्कि दूसरों को सिखाने में भी सक्षम बनाते हैं, श्लोक 4। नीतिवचन 1-4 रोजमर्रा की जिंदगी की व्याख्या करने की जल्दबाजी में बुद्धि को आगे बढ़ाता है, चूँकि इसकी चतुराई भरी शब्दावली के

अर्थ पूरे पुराने नियम में समान रूप से सकारात्मक नहीं हैं। वे उत्पत्ति 3 में साँप को याद करते हैं। हमें साँपों की तरह बुद्धिमान बनने की ज़रूरत है, न कि केवल कबूतरों की तरह निर्दोष, जैसा कि यीशु ने हमें मैथ्यू 10, श्लोक 16 में बताया है। इस प्रकार, नीतिवचन कभी-कभी दुनिया के तरीके का वर्णन कर सकते हैं, हमेशा यह स्वीकार किए बिना कि दुनिया कैसी है किसी विशेष प्रतिक्रिया पर कार्य करना या निर्धारित करना।

ज्ञान का यह व्याख्यात्मक कार्य, हमें यह समझने में मदद करता है कि क्या हो रहा है, श्लोक 5 और 6 में आगे दिखाई देता है। बुद्धि स्वयं का निर्माण करती है। ज्ञान को सीखना और सिखाना इसके अर्थ को सुनने और समझने की क्षमता बढ़ाने के लिए मूलभूत है। बुद्धि का धन अक्षय है।

बुद्धिमानों को इन शब्दों को समझने के कौशल में वृद्धि करनी होगी, जो मानव समाज में जीवन के लगातार बदलते संदर्भ को संबोधित करने के लिए काफी गहरे हैं। दूसरा, बाइबिल का ज्ञान लोकतांत्रिक है, जो जहां है वहीं सभी को संबोधित करता है। बुद्धि का सार्वभौमिक निमंत्रण प्रारंभ में अध्याय 1, श्लोक 1 में स्पष्ट संबोधनकर्ता की कमी से स्पष्ट होता है। इसके बाद, बुद्धि एकत्रित होती है।

कोई कभी भी इतना बुद्धिमान नहीं हो पाता कि अधिक की आवश्यकता बंद कर दे। फिर भी, साथ ही, हम सरल लोगों और युवाओं को ज्ञान सिखा सकते हैं। इस प्रकार, कहावतें उस बात पर परेशान नहीं होती हैं जिसे दार्शनिक सद्गुण का विरोधाभास कहते हैं, यह विचार कि केवल सद्गुणी ही सद्गुणों में विकसित हो सकते हैं, लेकिन जिस व्यक्ति में सद्गुणों की कमी है वह कैसे शुरूआत कर सकता है? अगले कदम के लिए बुद्धि, यहां तक कि जीवन के पथ पर पहले कदम के लिए भी, हमेशा ईश्वर से उपलब्ध होती है, जब तक कि कोई व्यक्ति सादगी से अहंकारी मूर्खता की ओर इतनी दूर नहीं चला जाता है कि वह पीछे मुड़ने से पूरी तरह इनकार कर देता है।

तीसरा, नीतिवचन 1.7 स्थापित करता है कि ज्ञान, फिर, धार्मिक रूप से निहित है। प्रभु के भय से शुरू होकर, बुद्धि ईश्वर का एक उपहार है। यहाँ, परमेश्वर का नाम यहोवा है, जिसके द्वारा सृष्टिकर्ता स्वयं को इस्राएल के साथ वाचा में प्रकट करता है।

यहोवा के रहस्योद्घाटन की प्रदत्तता को मान लिया गया है, और अध्याय 1, श्लोक 7, या तो दर्शाता है। लोग या तो इस ईश्वर के प्रति भय के साथ उचित प्रतिक्रिया देते हैं, या फिर मूर्खता के साथ अनुचित तरीके से। मूर्ख घमंडी होते हैं, तथाकथित घातक पापों की जड़ नहीं तो जड़ ही होते हैं, जैसा कि हम और अधिक बात करेंगे।

मूर्ख अभिमानी होते हैं, वे अनुशासन से घृणा करते हैं, और वे परमेश्वर से किसी परिणाम की आशा नहीं करते हैं। यहां अनुग्रह की आवश्यकता का एक और प्रारंभिक संकेतक एक कहावत, मशाल के विचार में शामिल रहस्य की आभा है, जो एक दृष्टांत को भी नामित कर सकता है। यीशु की परवलयिक शिक्षा की दोहरी वास्तविकता नीतिवचन के समानांतर चलती है।

एक ओर, कहावतों की ठोस पार्थिवता सबसे सरल श्रोताओं के लिए भी कुछ समझ को सक्षम बनाती है, और शिक्षण को सामान्य जीवन में शामिल करती है। यदि आप कुछ समसामयिक

कहावतों के बारे में सोचें, जैसे कि बचाया गया एक पैसा कमाया हुआ पैसा है, समय में एक सिलाई से नौ बचत होती है, या, हाल ही में, बस करो, और इसी तरह की अन्य कहावतें, शायद आप पहचान लेंगे कि वे सबसे सफल हैं जब वे संक्षिप्त, काव्यात्मक और ठोस हैं, ताकि गारंटी के बजाय सामान्यीकरण पेश करते समय यादगार बने रहें। वे उन स्थितियों का निदान करने में मदद करते हैं जिन पर वे लागू होते हैं, लेकिन यदि उन्हें बुद्धिमानी से लागू किया जाना है तो उन्हें लकड़ी पर लागू नहीं किया जा सकता है।

इस प्रकार, दूसरी ओर, जैसा कि यीशु ने दृष्टान्तों के संबंध में कहा, जिनके पास है, उन्हें और अधिक दिया जाएगा, और उनके पास बहुतायत होगी, परन्तु जिनके पास कुछ नहीं है, उनसे वह भी छीन लिया जाएगा जो उनके पास है, मत्ती 13, 12. क्योंकि वे देखते हुए भी नहीं समझते, और सुनते हुए भी नहीं सुनते, और न समझते हैं। मैथ्यू 13 में, यीशु यशायाह 6, 9, और 10 को उद्धृत करते हैं।

नीतिवचन और दृष्टान्त भ्रामक रूप से सरल लगते हैं, फिर भी उनमें अर्थ की परतें उन लोगों के लिए आरक्षित हैं जो भगवान से डरने के लिए पर्याप्त बुद्धिमान हैं। और एक तरफ, यह जानना हमारे लिए गंभीर हो सकता है कि हमारी समकालीन संस्कृति में कहावतों का सबसे बड़ा स्रोत मैडिसन एवेन्यू है। हमारे चरित्र निर्माण के संबंध में विचार के लिए भोजन।

अब यहां प्रभु का भय कोई आतंक नहीं है जो और दूरियां पैदा कर दे। इसके बजाय, विश्वास के लिए पुराने नियम का यह पर्यायवाची, मोटे तौर पर, प्रारंभिक मान्यता पर जोर देता है कि ईश्वर वह निर्माता है जिसके प्रति हमें अपना हिसाब देना चाहिए। प्राचीन धर्मशास्त्री बेडे दास भय को पवित्र भय से अलग करते हैं।

हमारे पापों पर आरंभिक पीड़ा होने पर, परमेश्वर का पूर्ण प्रेम सज़ा के भय को दूर कर देता है, 1 यूहन्ना 4, 18, ताकि दान हमारे अंदर हमारे प्यारे पिता को निराश करने का पवित्र भय पैदा कर सके। इसलिए, जेम्स 1, 5-8, हमारे लिए स्पष्ट करता है कि कैसे ईश्वर का यह भय हमें ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। यदि तुम में से किसी के पास बुद्धि की कमी है, तो परमेश्वर से मांगो, जो उदारता और कृतघ्नता से सबको देता है, और वह तुम्हें दी जाएगी।

परन्तु विश्वास से मांगो, कभी सन्देह न करो, क्योंकि सन्देह करने वाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है। संदेह करने वाले को, दोहरे मन वाला और हर तरह से अस्थिर होने के कारण, भगवान से कुछ भी प्राप्त करने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। दोनों तरीकों का मूल द्वंद्व न केवल बुद्धिमान और मूर्ख के बीच अंतर करता है, बल्कि यह बुद्धिमानों के दिलों में भी व्याप्त है, जिन्हें दोहरे दिमाग वाला नहीं बनना चाहिए, और इसका पालन करने के कम इरादे के साथ भगवान से ज्ञान मांगना चाहिए।

यह कितना भी विचित्र क्यों न लगे; यह एक ऐसा उपहार है जो लोगों को कभी-कभी बिना खोले ही मिल जाता है। ज्ञान के इस धार्मिक आयाम में दो तरीकों से शामिल द्वंद्व बाइबिल आधारित द्वैतवाद नहीं है। बल्कि, ये दोनों रास्ते बिल्कुल इस तथ्य से उपजे हैं कि सच्चा ईश्वर केवल एक ही है।

प्रत्येक व्यक्ति के लिए संपूर्ण जीवन, सृष्टिकर्ता, यहोवा के प्रभुत्व के अधीन है। शरीर और आत्मा के लिए, अभी के लिए, और अभी नहीं, विश्वासियों के समुदाय और दुनिया के लिए, यह सब सृष्टिकर्ता के प्रभुत्व के अधीन है। गैर-बाइबिल आधारित द्वैतवाद इन वास्तविकताओं को पूरी तरह से अलग-अलग श्रेणियों में विभाजित करता है जिसमें एक या दूसरे को प्राथमिकता मिलती है।

लेकिन उस प्रकार के द्वैतवाद को अस्वीकार करने से वैध भेद समाप्त नहीं हो जाते। ये नीतिवचन हमें परमेश्वर के ज्ञान की एकनिष्ठ खोज में मार्गदर्शन करने के लिए प्रदान करते हैं। किसी दिन भगवान का न्याय उन लोगों के बीच अंतर करेगा जो स्वेच्छा से भगवान की प्रभुता को स्वीकार करते हैं और जो अनिच्छा से ऐसा करते हैं।

हालाँकि ईश्वर ने दुनिया से इतना प्यार किया कि उसने अपना इकलौता बेटा, यूहन्ना 3.16, दे दिया, उसने ऐसा इसलिए किया ताकि दुनिया उसके माध्यम से बचाई जा सके, कविता 17, न कि इसे वैसे ही छोड़ दिया जाए, जैसे यह अंधेरे में छिप रही है, आयत 19-21। या एक और द्वैत-विरोधी मार्ग, 1 तीमुथियुस 4, भगवान ने जो कुछ भी बनाया वह अच्छा है, श्लोक 4 की शुरुआत। इसे धन्यवाद के साथ प्राप्त किया जाना चाहिए, भगवान के वचन और प्रार्थना द्वारा पवित्र किया जाना चाहिए, श्लोक 4 और 5। हालाँकि यह सच है, की दिशा मनुष्य का हृदय अब अच्छा नहीं रहा, परन्तु वह इन उपहारों को मूर्तियों में बदल देता है। यह परमेश्वर के वचन और प्रार्थना द्वारा पवित्र किये गये सामान बनाने से इनकार करता है।

मांस और शैतान के लिए धन्यवाद, यीशु मसीह की रोशनी के अलावा, हम भूल जाते हैं कि दुनिया और उसकी इच्छाएं खत्म हो रही हैं, लेकिन जो लोग भगवान की इच्छा पर चलते हैं वे हमेशा जीवित रहेंगे, 1 जॉन 2.17। तो, नीतिवचन में दो तरह की सामग्री, नीतिवचन के लगातार विरोधाभासी रूप और इसी तरह, गलत प्रकार के द्वैतवाद को मजबूत नहीं कर रहे हैं, वे भगवान के दयालु आधिपत्य के लिए अपना सारा जीवन समर्पित करके इसका सटीक प्रतिकार कर रहे हैं। डर। चौथा, फिर, ज्ञान के सामाजिक, लोकतांत्रिक और धार्मिक आयामों का परिणाम पहले से ही सामने आ रहा है। बुद्धि प्रगतिशील है।

शिक्षक सक्रिय रूप से बुनियादी अनुशासन प्रदान करने से लेकर अधिक जटिल विवेक को प्रोत्साहित करने की ओर बढ़ता है, क्योंकि युवा लोग अपनी सादगी पर काबू पाते हैं और मार्ग पर चलते हुए ज्ञान में वृद्धि करते हैं। लक्ष्य पारंपरिक सूत्रों की गुलामी भरी पुनरावृत्ति नहीं है, बल्कि एक परिपक्व व्यक्ति की स्वतंत्रता है जो निरंतर दिशा के बिना, सत्य को पहचानना और उसके अनुसार जीना सीखता है। हालाँकि, वयस्कता के उस लक्ष्य को साकार करने के लिए आवश्यक विकास के लिए प्रारंभिक निर्देश और निरंतर मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।

यहां तक कि परिपक्व बुद्धिमान व्यक्ति को भी अनेक परामर्शदाताओं की आवश्यकता होती है और उसे सुनकर सीखना जारी रखना होता है। ज्ञान के इस प्रगतिशील तत्व को निम्नलिखित अध्यायों में नाटकीय रूप दिया जाएगा। इसलिए, जब हम पहले अध्याय में श्लोक 8-19 पर आते हैं, तो, हम बुरा न सुनने के विषय पर आते हैं।

इन छंदों को एक साथ रखा गया है और शिक्षा के विषय सहित अन्य छंदों से पहले के छंदों से जोड़ा गया है। पाठ दो वक्ताओं को प्रस्तुत करता है जो दो अलग-अलग रास्तों की पेशकश करते हैं जो दो अलग-अलग छोरों की ओर ले जाते हैं। वक्ता माता-पिता हैं, श्लोक 8 और 9, और पापी, श्लोक 10-19।

पापी लोभ के लिये मोहक और हिंसक होते हैं। फिर भी उनका अंत मृत्यु है, श्लोक 18 और 19 में आत्म-विनाश के संदर्भ में स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है, साथ ही श्लोक 16 में बुराई शब्द को शामिल करने वाले दोहरे अर्थ के साथ। निहितार्थ यह है कि माता-पिता की शिक्षा का अंत जीवन है।

जबकि श्लोक 11 और 15 में रक्त के संदर्भ को चरम के रूप में देखना आकर्षक है, ताकि लुटेरे समुदाय से बाहर हो जाएं, श्लोक 13 में घरों का संदर्भ कुछ सामाजिक स्थिति का संकेत देता है। और श्लोक 19 दृष्टि के क्षेत्र को विस्तृत करता है। लाभ के लालची सभी लोगों का अंत ऐसा ही होता है।

लुटेरे भ्रष्ट इच्छा का एक चरम रूप प्रस्तुत करते हैं जो हर किसी में घुसपैठ करता है, और पापी वैकल्पिक समुदाय, श्लोक 14, गिरोह के आकर्षक रूप पेश करते हैं। हमारी मानवीय संबंधशीलता को देखते हुए, गिरोह का प्रतिकार हमारे अपने माता-पिता का सम्मान करना है। स्वतंत्रता की एक निश्चित आयु तक पहुँचने तक न केवल अनिच्छा से प्रत्यक्ष आदेशों का पालन करना, बल्कि उनसे प्राप्त आध्यात्मिक विरासत को पुरस्कृत करना भी।

हालाँकि सुनना करने की गारंटी नहीं देता, फिर भी वे गहराई से जुड़े हुए हैं। नकारात्मक रूप से कहें तो, बुरी संगति अच्छे चरित्र को भ्रष्ट कर देती है, 1 कुरिन्थियों 15.33। सकारात्मक रूप से कहें तो, बाइबिल की शिक्षा का एक व्यक्तिगत और मौखिक चरित्र है जिसे आज के छवि-प्रधान समाज में भी संरक्षित करना महत्वपूर्ण है जिसके बारे में हम बहुत कुछ सुनते हैं। माता-पिता का ज्ञान, फिर, अधिकार और प्रेमपूर्ण चिंता के माध्यम से युवा इच्छा को संबोधित करता है, संभावित कार्यों के परिणामों के बारे में परिपक्व विचार-विमर्श प्राप्त करने की कोशिश करता है।

श्लोक 20 से 33 तक ज्ञान के प्रस्ताव को सुनना। बाइबिल की शिक्षा का यह व्यक्तिगत चरित्र एक नए आयाम को प्रकट करता है, जो श्लोक 20 से शुरू होता है, जैसे कि ज्ञान, व्यक्तित्व, सार्वजनिक चौराहे पर चिल्लाता है। वह यहां अपना निमंत्रण जारी करना शुरू करती है और फिर अध्याय 8 और श्लोक 1 से शुरू करके इसका विस्तार करती है। इन खंडों में, मुझे लगता है कि इसे सारांश के माध्यम से दिखाया जा सकता है कि ज्ञान सार्वजनिक रूप से उपलब्ध है, व्यक्तिगत रूप से सक्रिय है, और पहले से ही तिरस्कृत है।

नीतिवचन अय्यूब 28 की तुलना में एक अलग जोर देता है। जबकि अय्यूब 28 इस बात पर जोर देता है कि बुद्धि किसी प्राणी द्वारा दी गई नहीं है, यह सिर्फ लेने के लिए नहीं है, इसे पाना कठिन है, नीतिवचन प्रभु के समान भय का जश्न मना रहा है, लेकिन एक अलग जोर के साथ। भगवान पहली नज़र में नहीं, बल्कि दिव्य वाणी सुनने और माता-पिता के माध्यम से दिव्य शिक्षा सुनने पर ज्ञान उपलब्ध कराते हैं।

तो, ज्ञान बहुत सार्वजनिक रूप से उपलब्ध है, और यह उस बात का हिस्सा है जिस पर ज्ञान का मानवीकरण जोर देता है। दूसरा, बुद्धि व्यक्तिगत रूप से सक्रिय है। नीतिवचन 1 में, बुद्धि चिल्ला रही है, विचारों और शब्दों को बाहर निकालने का वादा कर रही है, बुला रही है, इनकार का अनुभव कर रही है, और इसलिए हंस रही है और मजाक कर रही है, जवाब न देने या खुद को देने का विकल्प चुन रही है।

वास्तव में ज्ञान का यह व्यक्तिगत चित्रण एक ओर माता-पिता से संबंधित है, नीतिवचन की पुस्तक की शिक्षा, और शायद स्वयं ईश्वर से, जैसा कि ईसाई अंततः समझते हैं, यीशु मसीह में प्रकट हुआ, ज्ञान का मानवीकरण मुश्किल है, और हम कर सकते हैं इसके बारे में बाद में अधिक बात कर पाऊंगा, लेकिन निश्चित रूप से ज्ञान की व्यक्तिगत गतिविधि पर जोर दिया गया है, जो किसी तरह ईश्वर की रचना के प्रति उसकी व्यक्तिगत गतिविधि को प्रतिबिंबित और मध्यस्थता करता है। लेकिन तीसरी बात, बुद्धि का पहले ही तिरस्कार किया जा चुका है। इसके इन्कार को श्लोक 24 और 25 तथा 29 और 30 में एक तथ्य के रूप में माना गया है।

इस भाषा की संरचना उस व्यक्तिगत अस्वीकृति की याद दिलाती है जो ईश्वर की ईर्ष्या को उद्घाटित करती है, यहाँ तक कि व्यवस्थाविवरण में इज़राइल के लिए वाचा के शाप की भविष्यवाणी भी। इसलिए यहां के युवा मूर्ख आवश्यक रूप से समुदाय से बाहर नहीं हैं, वे भगवान की वाचा के लोगों की अगली पीढ़ी हैं जो हमेशा स्वच्छंदता से प्रलोभित होकर अपनी यात्रा शुरू करते हैं। नीतिवचन इस बारे में काफी यथार्थवादी है कि इसकी नैतिक सामग्री कैसे प्राप्त की जा सकती है।

नीतिवचन 2 में, बोलने वाला भाग व्यक्तिगत ज्ञान से वापस माता-पिता की ओर चला जाता है, लेकिन संदेश मूल रूप से वही रहता है, समझने की तलाश करें। जबकि अध्याय 1 में, ज्ञान की शुरुआत प्रभु के भय से हुई और इसने सुनने और रहस्योद्घाटन को स्वीकार करने पर जोर दिया, अध्याय 2 अब अनिवार्यताओं की एक श्रृंखला के माध्यम से सक्रिय खोज का आह्वान करता है, रहस्योद्घाटन की स्वीकृति के साथ शुरू होता है और पूरे दिल से खोज की ओर बढ़ता है। नीतिवचनों में, समझ, और यहाँ तेबुना एक विशेष रूप से प्रमुख शब्द है जो छंद 2, 3, 5, 6, 9, और 11 में दिखाई देता है, लेकिन अधिक सामान्यतः समझ, नीतिवचन में चित्रित ज्ञान मुख्य रूप से सैद्धांतिक नहीं है।

यह आमतौर पर यूनानियों द्वारा प्रोनेसिस कहे जाने वाले व्यावहारिक कारण के करीब है, जिसके साथ हम ठोस सांसारिक स्थितियों में अच्छी तरह से रहते हैं। इसमें अभी भी एक चिंतनशील तत्व शामिल है, उदाहरण के लिए श्लोक 1 और 2 द्वारा निहित चिंतन और सावधानी, श्लोक 4 की हताश खोज, श्लोक 7 का भंडारण, श्लोक 10 का आंतरिककरण, इत्यादि। एक चिंतनशील तत्व है, यह कुछ ऐसा है जिसे हम चबाते हैं, यह समझ, यह ज्ञान।

हालाँकि ऐसी समझ का लक्ष्य सैद्धांतिक निपुणता नहीं है, न ही यह उस प्रकार की मानवीय निपुणता है जिसकी आधुनिक ज्ञान अक्सर तलाश करता है। तकनीक, जैसा कि यूनानियों ने इसे कहा था, और आप वहाँ प्रौद्योगिकी शब्द के भाव सुन सकते हैं, वह तकनीक जिसके द्वारा मनुष्य

ब्रह्मांड को समझ सकते हैं ताकि इसे नियंत्रित कर सकें, भविष्यवाणी करके और फिर चीजों को बनाकर या आकार देकर इसमें महारत हासिल कर सकें। हम उस तकनीकी अर्थ में व्यावहारिक कारण के बारे में बात नहीं कर रहे हैं।

हम उस ज्ञान के बारे में बात कर रहे हैं जो हमें लोगों के रूप में और हमारे समुदायों के न्याय की रक्षा करने का वादा करता है, न कि हमें केवल हमारी अपनी महारत या अपने तरीकों से खुद की रक्षा करने के लिए छोड़ देता है। श्लोक 1, 4 और 7 में खजाना एक विशेषाधिकार प्राप्त रूपक है, अध्याय 1 से गिरोह के वादों के विपरीत। पहले उसके राज्य और उसकी धार्मिकता की तलाश करें और ये सभी चीजें आपको भी दी जाएंगी, मैथ्यू 6.33। यीशु की वह ज्ञानपूर्ण बात बात बताती है। हमें असली खजाना तभी मिलता है जब हम पैसे के बजाय भगवान से प्यार करते हैं, और जब हम ऐसा करते हैं तो भगवान हमें सही तरीके से प्राणियों की वस्तुओं का आशीर्वाद देते हैं।

नीतिवचन 2 का दूसरा भाग श्लोक 12 से 15 में उन अनेक लोगों से बुद्धि द्वारा मुक्ति का वादा करता है जो विकृत आनंद के साथ मृत्यु का मार्ग अपनाते हैं, और विशेष रूप से श्लोक 16 से 19 में व्यभिचारी से मुक्ति का वादा करता है, जो बाद के विषय की आशा करता है। हम उनके प्रस्तावों को अस्वीकार करके और साथ ही खुद को बचाने से इनकार करके खुद को बचाते हैं। नीतिवचन 1 से 9 तक के माता-पिता के व्याख्यान एक पैटर्न का पालन करते हैं, सुनने के लिए एक प्रारंभिक अपील, ऐसा करने के लिए प्रेरणा, पाठ का सार और फिर एक निष्कर्ष, जो आम तौर पर किसी के चुनने या न चुनने के परिणामों को रेखांकित करता है। पाठ में बताए गए अच्छे चरित्र को आगे बढ़ाने के लिए।

नीतिवचन 2 में, शुरुआती अपील लंबी है, यकीनन श्लोक 1 से 11 तक, और मुख्य पाठ विनाशकारी लोगों से ज्ञान के माध्यम से मुक्ति को स्वीकार करने, बुराई के रास्ते से बचाए जाने, श्लोक 12, और व्यभिचारी से, श्लोक 16 को स्वीकार करने से जुड़ा है। अध्याय संरचना सूक्ष्मता से किसी और बात पर जोर देता है। 22 छंद हिब्रू वर्णमाला में अक्षरों की संख्या के बराबर हैं, और छंद 11-12 दो अक्षरों की प्रधानता के अनुसार अध्याय को समद्विभाजित करते हैं।

उपखंडों की समानांतर लंबाई को देखते हुए, पाठ दैवीय रूप से प्रदान किए गए आदेश की पूर्णता पर जोर देता है। जो लोग अनुबंधित जीवन के मार्ग पर चलते हैं उनके लिए कुछ भी ईश्वर की नज़र या अच्छे प्रावधान से बच नहीं पाता है। तो यहाँ शैली सार संप्रेषित करती है।

पाठ वाचा की भाषा, आज्ञाओं और धार्मिकता से संतृप्त है, पद 8 में हेसेड, या वफ़ादार, प्रेमपूर्ण दयालुता है, और शब्दावली अक्सर धर्मत्याग के लिए उपयोग की जाती है, उदाहरण के लिए, पद 13 में त्याग। मुद्दा यह है कि इसमें भगवान के ऊपर जोर दिया गया है यहां अनुबंध संबंधों में व्यवस्था प्रकट हो रही है, और व्यवस्था पर यह जोर अध्याय 2 में व्याख्यान की संरचना में भी बनाया गया है। शैली सार से मेल खाती है। नीतिवचन 3 और उसके बाद के अध्यायों में से अधिकांश शब्दावली और रूपांकनों को काफी हद तक दोहराते हैं जिनका हम अब तक सामना करना शुरू कर चुके हैं।

फिर भी जोर में मामूली बदलाव कुछ नाटकीय प्रगति का संकेत देता है। अध्याय 3 में, इस प्रगति में अब ज्ञान को बनाए रखना शामिल है क्योंकि हमने उसे सुन लिया है और उसका पीछा करना शुरू कर दिया है। इसलिए, मेरी शिक्षा को मत भूलना, श्लोक 1। वफादारी और विश्वासयोग्यता को अपने से दूर न जाने दो, श्लोक 3। धन्य हैं वे जो निरंतर ज्ञान प्राप्त करते हैं और वे जो समझ प्राप्त करते हैं, श्लोक 13।

वह उन लोगों के लिए जीवन का वृक्ष है जो उसे पकड़ते हैं। जो लोग उसे पकड़ते हैं वे सुखी कहलाते हैं, पद 18। मेरे बच्चे, इन्हें अपनी दृष्टि से ओझल न होने दो।

खरी बुद्धि और विवेक रखें, श्लोक 21। निस्संदेह, ये उपदेश उन लोगों को शामिल कर सकते हैं जिन्होंने अभी तक ज्ञान की शुरुआत नहीं की है, लेकिन रिश्ते को बनाए रखने पर जोर बढ़ रहा है। श्लोक 1 से 12 की प्रारंभिक अपील में अंतिम आदेश चुपचाप स्वीकार करता है कि सरलीकृत प्रतिशोध धर्मशास्त्र, जैसा कि हम इसे कहते हैं, गलत है।

अच्छे लोग हमेशा अच्छी परिस्थितियों का आनंद नहीं लेते, अन्यथा यहां उपदेश देना आवश्यक नहीं होता। नीतिवचन 24.16 बाद में धार्मिक पीड़ा के बारे में अधिक स्पष्ट विवरण प्रदान करेगा। धर्मी सात बार गिरकर फिर उठ खड़ा होता है, परन्तु दुष्ट विपत्ति के समय ठोकर खाता है।

जब हम विसंगति के इन क्षणों का सामना करते हैं तो यह विश्वास करने का प्रलोभन होता है कि ज्ञान को पकड़कर रखना उचित नहीं है। लेकिन अगर हम एक सरलीकृत प्रतिशोध धर्मशास्त्र से आगे निकल जाते हैं जिसमें अच्छाई हमेशा तुरंत अच्छाई पैदा करती है, तो हम महसूस कर सकते हैं कि ज्ञान के मूल्य के बारे में सामान्यीकरण किसी प्रकार की सरलीकृत गारंटी पर ज्ञान के लिए प्रोत्साहन को आराम दिए बिना सही है जो स्पष्ट रूप से सच नहीं है। जीवनानुभव। नीतिवचन 3 के श्लोक 13 से 20 में एक अंतराल ज्ञान की प्रशंसा के साथ इसकी प्रारंभिक अपील का अनुसरण करता है।

हमें एक विवाह साथी की तरह ज्ञान का अनुसरण करना चाहिए, फिर भी ऐसा करते समय हम जीवन के एक वृक्ष को गले लगाते हैं, जैसा कि श्लोक 18 में कहा गया है। यहाँ वैवाहिक प्रकार की शब्दावली है। श्लोक 19 और 20 में हमारे पास प्रारंभिक दावा है, अध्याय 8 की आशा करते हुए, कि बुद्धि वह साधन है जिसके द्वारा भगवान ने ब्रह्मांड को स्थिर और सुरक्षित बनाया है।

यहाँ और अन्यत्र धर्मग्रंथों में जीवन के वृक्ष का प्रतीकात्मक उपयोग उस चीज़ की संभावित अस्पष्टता को स्थापित करता है जिसे लोग ज्ञान कहते हैं। यदि वे प्राणी जीवन के लिए ईश्वर प्रदत्त डिज़ाइन को अपनाते हैं, तो मनुष्य को आशीर्वाद मिलता है। लेकिन अगर वे ईश्वर के जीवन के वृक्ष को अपनाने के बजाय अच्छे और बुरे के अपने ज्ञान के माध्यम से ईश्वर से स्वायत्तता में रहना चाहते हैं, तो मनुष्य एक घातक पतन का चयन करते हैं।

केवल ईश्वर का दयालु निर्णय ही हमें मूर्तिपूजक जीवन के उस रूप में हमारे विनाश को हमेशा के लिए सील करने से रोकता है। इसलिए, स्वयं अपनाई गई बुद्धि मानव स्वतंत्रता की घोषणा के लिए एक माध्यम हो सकती है जो पहले स्थान पर हमारे लिए इतनी घातक साबित हुई। हालाँकि, सृष्टिकर्ता के उपहार के रूप में, जब हम ईश्वर को अपनी ओर आने और उसके निमंत्रण के साथ

पुकारने का जवाब देते हैं, तो ज्ञान हमें हमारे उत्कर्ष के लिए ईश्वर की योजना के साथ जोड़ देता है।

मेरे बच्चे के साथ अध्याय 3, श्लोक 21 में सीधे संबोधन की बहाली अगले उपधारा का परिचय देती है और यहां हमारे पास पाठ का सार है। हमें अपनी सुरक्षा के स्रोत के रूप में बुद्धि को अपनाना चाहिए और ऐसा करते हुए हमें अपने पड़ोसियों की देखभाल करनी चाहिए। इस तरह का ज्ञान, दूसरे शब्दों में, इस बात पर केंद्रित है कि हम अपने पैसे और अपने मुंह का उपयोग किस प्रकार करते हैं, जिसमें हमारे दिल अपनी सुरक्षा पाते हैं।

इसलिए जेम्स की पुस्तक के साथ प्रतिध्वनि यहाँ स्पष्ट है। दूसरों के अलावा जिन्हें मैं अपनी टिप्पणी में सूचीबद्ध करता हूँ और आप वहाँ पा सकते हैं, मैं यहां केवल उल्लेख करूंगा, हमारे पास जेम्स में नीतिवचन 3.34 के ग्रीक अनुवाद से एक उद्धरण भी है, भगवान अभिमानियों का विरोध करते हैं लेकिन विनम्रों को अनुग्रह देते हैं। जेम्स 4.6. ऑगस्टीन ने सही सुझाव दिया है कि पवित्र पुस्तकों में शायद ही कोई ऐसा पृष्ठ हो जिसमें विनम्रता और ईश्वर की कृपा के बारे में यह सच्चाई प्रकट न हो।

यह इस अध्याय, नीतिवचन 3 के निष्कर्ष में एक उपयुक्त सारांश प्रदान करता है, कि क्यों नीतिवचन ज्ञान को प्रभु के भय में समाहित पाते हैं जबकि सच्चे जीवन का मार्ग खोजने में ज्ञान की खोज शामिल है। नीतिवचन 3 और पूरी किताब में दर्शाया गया ईश्वर दयालु है, वह मनुष्यों पर अत्याचार नहीं करता बल्कि यह चाहता है कि वे फलें-फूलें। नीतिवचन 3.3 ईश्वरीय आत्म-प्रकाशन के माध्यम से ईश्वर के चरित्र के लिए दृढ़ प्रेम और विश्वासयोग्यता की भाषा का उपयोग करता है जो मूसा को तब प्राप्त हुआ जब वह निर्गमन 34 में चट्टान की दरार में छिपा हुआ था।

चूँकि ईश्वर न्यायकारी और दयालु है, वह चाहता है कि हर कोई फले-फूले, सभी लोगों को कभी-कभी अनुशासन से गुजरना पड़ता है और कुछ लोगों को निश्चित न्याय से गुजरना पड़ता है। न्याय और अनुग्रह को एक-दूसरे के विरुद्ध खड़ा करने से दूर, हमारे लिए परमेश्वर की पिता जैसी देखभाल की बाइबिल समझ वास्तव में हमें सांस्कृतिक गतिरोधों से मुक्त करती है जिसमें न्याय और दया अलग हो जाते हैं। हमें उन्हें एक साथ रखने की ज़रूरत है क्योंकि नीतिवचन का भगवान ऐसा करता है।

भगवान के पास मानक हैं, भगवान ने हमें अच्छी तरह से जीने में मदद करने के दयालु उद्देश्य के लिए सृष्टि के भीतर आदेश दिया है। और नीतिवचन 3 हमें न केवल शुरू में ज्ञान की पेशकश सुनने और फिर उसे स्वीकार करने का आग्रह करता है, बल्कि इस ज्ञान को बनाए रखने का भी आग्रह करता है क्योंकि हम मानते हैं कि भगवान चाहते हैं कि हम शालोम का आनंद लें। अगला व्याख्यान, नीतिवचन 4, उल्लेखनीय रूप से सीधा है।

प्रत्यक्ष संबोधन तीन इकाइयों को अलग करता है, श्लोक 1-9, श्लोक 10-19, और श्लोक 20-27। पहली इकाई वह है जो सबसे महत्वपूर्ण है। पहली इकाई, श्लोक 1-9 में पिता को अपने बचपन के निर्देशों का हवाला देते हुए परिवार की ज्ञान परंपरा की गवाही देना शामिल है।

नीतिवचन में परिलक्षित समाज पितृसत्तात्मक है, लेकिन श्लोक 3 में, बाइबिल पाठ माँ का भी सम्मान करता है। दूसरी इकाई, श्लोक 10-19, शिक्षण में वर्तमान पिता की निष्ठा पर जोर देती है, जिसका पालन अब बेटे को करना होगा। तीसरी और अंतिम इकाई, श्लोक 20-27, शारीरिक स्थिति और गति की क्रियाओं के साथ-साथ शरीर के अंगों और इंद्रियों से भरी हुई है।

इसके हृदय में हृदय है, श्लोक 23, जहाँ से क्रिया प्रवाहित होती है। हम हृदय की रक्षा करते हैं, विशेष रूप से आँखों और मुँह और कानों के द्वारा, अर्थात् जो हम देखते हैं, कहते हैं और सुनते हैं उसके द्वारा। माता-पिता की शिक्षा और हृदय की रक्षा का एक महत्वपूर्ण आयाम यौन निष्ठा से संबंधित है, नीतिवचन 5 का स्पष्ट विषय, जो अधिक सामान्यतः वाचा संबंधों की बात करता है।

अध्याय की शुरुआत ऐसी शिक्षा को सुनने के आह्वान से होती है, जिसे श्लोक 1 और 2 में ज्ञान के साथ जोड़ा गया है। श्लोक 3-6 में स्वच्छंदता के घातक होने के संदर्भ में एक तर्क सामने आना शुरू होता है। श्लोक 7 में जोरदार प्रत्यक्ष संबोधन, श्लोक 9-14 के विनाशकारी परिणामों से बचने के लिए, श्लोक 8 में व्यभिचार से बचने के बारे में महत्वपूर्ण उपदेश की ओर ले जाता है। फिर दूसरा उपदेश विवाह के भीतर यौन आनंद के सकारात्मक प्रतिरूप को उजागर करता है, श्लोक 15-20।

और अंत में, अंतिम तीन छंदों में खतरे में पड़ने वाले खतरनाक परिणामों के संबंध में एक धार्मिक निष्कर्ष है। जबकि मुख्य विषय में यौन निष्ठा शामिल है, भाषण का विषय भी प्रमुख है। युवा व्यक्ति की वाणी उसकी स्थिति को दर्शाती है और वह जो सुनता है उसका उस पर प्रभाव पड़ता है।

बाइबिल के उदाहरण अन्यत्र हमारे द्वारा सुने जाने वाले त्वरित संतुष्टि के प्रस्तावों को अस्वीकार करने की आवश्यकता पर जोर देते हैं। मूसा, जो मसीहा के प्रकट होने तक परमेश्वर के घर में एक वफादार पुत्र के रूप में प्रतिष्ठित था, इब्रानियों 3, 1-6, ने पाप के क्षणभंगुर सुखों का आनंद लेने के बजाय परमेश्वर के लोगों के साथ दुर्व्यवहार सहना चुना, इब्रानियों 11-25। शायद अधिक स्पष्ट रूप से, उत्पत्ति 39 में यूसुफ ने बड़ी कीमत चुकाकर पोतीपर की पत्नी को विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया।

ये उस प्रकार के मॉडल हैं जो नीतिवचन 5 की मांग को मूर्त रूप देते हैं। इसके विपरीत, बाकी नीतिवचनों की तरह, अध्याय 5 शारीरिक रूपकों से भरा हुआ है, जो न केवल व्यभिचार के खिलाफ चेतावनी देता है बल्कि वैवाहिक यौन संबंध को दैवीय रूप से बनाए गए उपहार के रूप में भी मनाता है। फिर भी, अर्थ की एक अतिरिक्त परत के लिए गति जमा होने लगती है जिसमें वैवाहिक निष्ठा ईश्वर के प्रति आध्यात्मिक निष्ठा का प्रतीक है।

हम अध्याय 7 के संबंध में इसके बारे में अधिक बात करेंगे। इज़राइल और चर्च के साथ भगवान की बातचीत की बाइबिल समझ के लिए विवाह अनुबंध आवश्यक है। इस प्रकार, यौन निष्ठा की सुरक्षा और आध्यात्मिक निष्ठा की खोज के बीच समानता पर विचार करना उचित है। नीतिवचन 6 के पहले पांच छंद लौकिक पुत्र को चेतावनी देते हैं कि वह पड़ोसी के ऋणों के लिए गारंटर के

रूप में काम न करें, छंद 3बी-5 में अंत में उपदेशों की एक श्रृंखला के साथ कहा गया है कि जब आप खुद को ऐसी प्रतिज्ञा से मुक्त कर रहे हों तो जल्दी से भाग जाएं।

इन छंदों में पिता को चिंतित करने वाली सुस्ती का विशेष उदाहरण छंद 6-11 में आलस्य के खिलाफ अधिक सामान्य उपदेश की ओर ले जाता है। नीतिवचन में, जो ईश्वर से डरता है वह लंबे समय तक चींटी के निवेश से सीख सकता है। सृजित व्यवस्था सृष्टिकर्ता के नैतिक ज्ञान का स्रोत है।

यहाँ बेटा अभी तक आलसी नहीं हो सकता है, लेकिन माता-पिता की चेतावनी एक आवश्यक निवारक उपाय है। न तो आलसी अभी तक खलनायक है, जैसा कि अध्याय 6 के छंद 12-19 में है, या व्यभिचारिणी या उसका शिकार, जैसा कि छंद 20-35 में है, लेकिन उसने उस रास्ते पर चलना शुरू कर दिया है। व्यक्तिगत सुरक्षा के लिए तैयारी करने में विफलता का परिणाम व्यापक रूप से परिवार या समुदाय में अन्य लोगों की जरूरतों को पूरा करने में विफलता के रूप में सामने आता है।

स्वाभाविक रूप से, 2 थिस्सलुनीकियों 3.10 को प्रारंभिक चर्च में बार-बार उद्धरण प्राप्त हुए, काम करने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति को खाना नहीं खाना चाहिए। पॉल के आदेश का संदर्भ स्पष्ट करता है कि निष्क्रिय हाथ किसी समुदाय में शैतान के खेल का मैदान हैं। पहली नज़र में, किसी के पड़ोसी के लिए गारंटी की ज़मानत की समस्या शायद ही व्यभिचार जैसी वस्तुओं की श्रेणी में आती है।

आखिरकार, बाइबल सभी प्रकार के उधारों का स्पष्ट रूप से विरोध नहीं करती है। कर्ज़ और ब्याज की परिष्कृत घुसपैठ के इर्द-गिर्द बनी आधुनिक अर्थव्यवस्थाएँ और भी दुविधाएँ पैदा करती हैं जिनका मैं यहाँ समाधान नहीं कर सकता। लेकिन उलझनों से बचने का बड़ा विषय इन विभिन्न वस्तुओं को एक साथ खींचता है।

इस अध्याय के छंद 16-19 में 6, फिर 7 पैटर्न एक खलनायक की सबसे विशिष्ट विशेषता पर प्रकाश डालता है, इस प्रकार की सूचियों के लिए व्यापक पैटर्न का अनुसरण करते हुए, जिसका हम नीतिवचन, एक्स, एक्स प्लस 1 में सामना करने जा रहे हैं। ये एक्स, एक्स प्लस 1 प्रकार की सूचियाँ अंतिम आइटम, प्लस 1 को उजागर करती हैं। इसलिए यहाँ, छंद 16-19 में, नीतिवचन अंततः पारिवारिक एकता और इस प्रकार अनुबंध बंधन के टूटने का विरोध करता है। एक बार फिर, मानव परिवार एक प्रमुख चिंता का विषय है क्योंकि ये दृष्टांत हैं जिनके माध्यम से हम भगवान के साथ रहना सीखते हैं। नीतिवचन 6, 16-19 भी धन्य-विरोधी की तरह पढ़ता है, आत्मा की गरीबी के विपरीत शुरुआत में घृणित आँखों वाला, नम्रता और दया के विपरीत निर्दोष रक्त बहाने वाले हाथों वाला, इसके विपरीत दुष्ट योजनाओं को तैयार करने वाला हृदय वाला दिल की पवित्रता, एक झूठ बोलने वाले गवाह के साथ जो हमारी निंदा करने वाले लोगों से पीड़ित होने के विपरीत झूठी गवाही देता है, और निश्चित रूप से एक ऐसे व्यक्ति के साथ जो शांति स्थापित करने के विपरीत परिवार में कलह का बीजारोपण करता है।

इन छंदों में सिबिलेंट ध्वनियों की प्रमुखता नीतिवचन की पूरी सूची में हिसिंग का प्रभाव देती है। ये वे विशेषताएँ हैं जो हम नहीं चाहते। वे हमें साँप की तरह डराते हैं।

यह कोई संयोग नहीं है कि पापों की इस सूची में घमंड पहले आता है, जबकि सूची, जैसा कि वाल्टके बताते हैं, सिर से पैर तक नीचे जाती है। हृदय, अनिवार्य रूप से, केंद्र में है। जो चीज़ इस सारी सामग्री को एक साथ लाती है वह किसी भी प्रकार की उलझनों या जाल से बचना है जो हमें ज्ञान की खोज के मार्ग से भटका सकती है।

माता-पिता का सीधा संबोधन श्लोक 20 में फिर से प्रकट होता है। इस बार, अध्याय 6 श्लोक 1 के विपरीत, आज्ञाकारिता बनाए रखने के लिए मानक फ्रेमिंग उपदेशों के साथ, माता-पिता की शिक्षा जो सुरक्षा प्रदान करेगी, उस सुरक्षा के वादे की ओर ले जाती है, उस सुरक्षा के प्रतीक में महिला की मूर्खता शामिल है। नीतिवचन 7 व्यभिचारिणी के विरुद्ध चेतावनी देने वाले एक अन्य व्याख्यान के साथ आता है, जिसका शाब्दिक अर्थ कई मायनों में आगे के आध्यात्मिक महत्व की ओर इशारा करता है।

सबसे पहले, आसपास के संदर्भ में न केवल इस व्याख्यान की चरम स्थिति शामिल है, बल्कि महिला ज्ञान के संबंध में नीतिवचन 8 के साथ इसका जुड़ाव भी शामिल है। वहां और नीतिवचन 9 में महिला ज्ञान और महिला मूर्खता दोनों के बारे में मानवीकरण से पता चलता है कि अध्याय 7 की व्यभिचारिणी शुरू में नजर आने वाली तुलना से अधिक होने लगी है। दूसरा, नीतिवचन 7 में विस्तारित परिचय पारंपरिक शिक्षा के प्रति निष्ठा पर जोर देता है, अध्याय 8 में महिला ज्ञान से जोड़ता है। चूंकि अध्याय 7 श्लोक 4 में आप मेरी बहन हैं, इसलिए यह साधारण बहनापा के बजाय विवाह की अंतरंगता को दर्शाता है।

समान्तर नमूने के लिए गीत 4.9 पर विचार करें, तुमने मेरे दिल, मेरी बहन, मेरी दुल्हन को मोहित कर लिया है। तीसरा, अधिक आध्यात्मिक महत्व की ओर इशारा करते हुए, प्रलोभन परिदृश्य के कई तत्व संकेत देते हैं कि जो दिखता है उससे कहीं अधिक चल रहा है। उदाहरण के लिए, इसकी कितनी संभावना है कि बुद्धिमान माता-पिता इस परिदृश्य को सामने आते हुए देख सकेंगे? छंद 6 और 7. चौथा, धर्म इस परिदृश्य में प्रवेश करता है।

विशेष रूप से, अध्याय 7 और श्लोक 14 की शब्दावली संभवतः कनानी प्रथाओं से एक संगति बलिदान को संदर्भित करती है जिसमें भोजन शामिल है, जैसा कि वाल्टके सुझाव देते हैं। पांचवां, कुछ भाषा श्लोक 27 में दोहरे अंतक, मृत्यु के कक्ष का सुझाव देती है। नीतिवचन में अन्यत्र शरीर या अस्तित्व के सबसे अंदरूनी हिस्सों को संदर्भित किया जाता है।

श्लोक 26 में, वाल्टके ने जो कल्पना की है, वह बेबीलोनियन इश्तार और सुमेरियन इन्ना से निकटता से संबंधित है, दोनों में प्रेम और युद्ध की देवी होने का दोहरा कार्य है। जबकि व्यभिचारिणी के सामने शारीरिक रूप से समर्पण करने के विरुद्ध चेतावनी वास्तव में बनी रहती है, नीतिवचन ने पहले ही इसके घातक वित्तीय, सामाजिक और यहां तक कि शारीरिक परिणामों का विवरण दे दिया है। इसलिए, यह परिदृश्य विदेशी धर्मों और वैकल्पिक ज्ञान की मोहक क्षमता के खिलाफ चेतावनी देता है, हमें उनकी कामुक अपीलों को पहचानने के लिए तैयार करता है।

आज, विडम्बना यह है कि, कुछ अधिक प्रगतिशील ईसाई ईश्वर के नियम के विपरीत, मोहक तरीके से ज्ञान की बात करते हैं, जो वास्तव में मूर्खता की ओर ले जा सकता है। यह कोई संयोग नहीं है कि ईसाई आस्था के कुछ उदार या प्रगतिशील रूप, जो यीशु मसीह और विशेष रूप से पुराने नियम की विशिष्टता पर जोर नहीं देते हैं, अधिक सामान्यीकृत आध्यात्मिकता के पक्ष में उनके व्यवसाय को आकार देते हैं जो कई धर्मों के अंदर और बाहर पाया जा सकता है, ये अधिक उदार रूप हैं आस्था के लोग यौन नैतिकता के पवित्रशास्त्र के पारंपरिक मानकों से हटते हैं। यहां तक कि रूढ़िवादी ईसाई भी अब इस क्षेत्र में समकालीन संस्कृति के साथ काफी समझौता करने के इच्छुक साबित हुए हैं।

ऐसी प्रवृत्तियाँ धर्म-कामुकता की गतिशीलता के अनुरूप हैं जो नीतिवचन 7 में पाई जाती है। विवाह अनुबंध को हल्के में लेना शाब्दिक और रूपक रूप से यहोवा के प्रति निष्ठा को हल्के में लेना है, और इसके विपरीत। आध्यात्मिकता, सेक्स की तरह, व्यक्तिगत और सामुदायिक दोनों ही मानवीय जरूरतों और लालसाओं को पूरा करती है। हमारे शरीर को आत्म-उत्थान के कार्यों में संलग्न करके, सेक्स और आध्यात्मिकता दोनों ही खुद को और दूसरों को, यहां तक कि भगवान के हमारे अनुभवों को भी मूर्तियों के रूप में मानने के लिए शक्तिशाली प्रलोभन प्रस्तुत करते हैं।

इसलिए, नीतिवचन 7 का परमेश्वर के साथ हमारे अनुबंधित संबंध के संबंध में बहुत महत्व है। नीतिवचन 8 में, इसके विपरीत, लेडी विजडम, डेम फ़ॉली की तरह, बहुत सार्वजनिक रूप से रोती है। लेकिन जबकि वह आकर्षक है, वह डेम फ़ॉली की अल्पकालिक आक्रामकता का अभ्यास करने के बजाय प्रेमी का दीर्घकालिक आकर्षण हासिल करना चाहती है।

उनकी अपील उनके शब्दों की सच्चाई पर टिकी हुई है, जो केवल मानसिक ज्ञान व्यक्त नहीं करती है। अधिक गहराई से, ये शब्द कुटिल और भ्रामक होने के बजाय धार्मिक और सीधे हैं, जैसा कि छंद 6 से 9 पर जोर दिया गया है। इसलिए, उनका मूल्य सर्वोत्तम धातुओं और रत्नों से भी अधिक है, श्लोक 10 और 11।

अगले दस श्लोक, श्लोक 12 से 21, बुद्धि के मूल्य को और भी अधिक प्रकट करते हैं, जिसमें राजसत्ता से संबंध भी शामिल है, क्योंकि बुद्धि वह सिद्धांत है जिसके द्वारा शासक सही ढंग से शासन करते हैं। ईश्वर की योजना नेताओं के लिए है कि वे ज्ञान के माध्यम से ईश्वरीय शासन में मध्यस्थता करें। नीतिवचन 8 के अंत में, श्लोक 32 से 36 में, पाठ का अपेक्षित निष्कर्ष शामिल है।

लेडी विजडम उन लोगों को आशीर्वाद देती है जो उसके तरीके को बनाए रखने के लिए ध्यान से और लगातार सुनते हैं। यह आशीर्वाद जीवन में और, भौतिक अस्तित्व से भी अधिक गहराई से, प्रभु की कृपा में निहित है। वैकल्पिक रूप से, जो लोग ज्ञान का तिरस्कार करते हैं वे मृत्यु को पसंद करते हैं, जो निहितार्थ से, पूरी तरह से शारीरिक नहीं है।

नीतिवचन 7 के अंत के साथ समानता पर ध्यान दें। दोनों अध्याय महिला बुद्धि को ठुकराने के परिणामस्वरूप मृत्यु की कठोरता के साथ समाप्त होते हैं। नीतिवचन 8 के शीर्ष पर, श्लोक 22 से 31 तक लेडी विजडम के मामले को न केवल वर्तमान में, बल्कि सबसे दूरस्थ अतीत, इसकी

रचना, और, निहितार्थ, इसके भविष्य में, ब्रह्मांड के भगवान के शासन से व्यापक रूप से जोड़कर मजबूत किया गया है। यह अनुच्छेद क्राइस्टोलॉजी के संबंध में कई बिंदुओं पर प्रसिद्ध रूप से विवादित है, या क्या इसका संबंध यीशु से है।

इस व्याख्यान में उस प्रश्न को अच्छी तरह से संबोधित करने के लिए आवश्यक समय की कमी के कारण, यहां मैं आपको बस अपनी टिप्पणी, और शायद भविष्य के व्याख्यान के लिए संदर्भित करूंगा, ताकि एक ऐसा पाठ विकसित किया जा सके जो अंततः चर्च के पिताओं से यीशु मसीह की सीख के साथ जुड़ता है, फिर भी ऐसा होता है बहुत सावधानी से, आधुनिक बाइबिल विद्वता से भी सीखने का प्रयास कर रहा हूँ। मुझे लगता है कि इस पाठ के रहस्य यह सोचने के लिए कुछ कारण प्रस्तुत करते हैं कि पवित्र आत्मा ने उस समय के मानव लेखक की तुलना में अधिक कहने के लिए ज्ञान के इस अवतार को ग्रहण किया था। किसी भी मामले में, जबकि ज्ञान की यह उपस्थिति अध्याय 9 में एक चरम निमंत्रण की आशा करती है, और फिर इस ज्ञान को एकत्र किया जाता है और अध्याय 10 से 29 में सन्निहित किया जाता है, और यह अध्याय 31 की महिला में एक और चरम रूप लेता है, ज्ञान का लगातार अवतार, मुझे लगता है, यह केवल एक दैवीय गुण या एकत्रित शब्दों के समूह से कहीं अधिक की ओर संकेत करता है।

वास्तव में, अध्याय 8 में सृजन के कार्य में ज्ञान की उपस्थिति से पता चलता है कि एक अवैयक्तिक दैवीय गुण से कहीं अधिक दृष्टि में है। यहां एक छोटा सा संकेत दिया गया है कि नीतिवचन 8 यीशु मसीह के प्रकाश में कैसे जीवंत हो सकता है। नोट श्लोक 31.

यह कविता मानवता को ईश्वर की प्रसन्नता के अभिन्न अंग के रूप में पहचानती है। और फिर यह ध्यान देने योग्य है कि यहोवा, परमेश्वर का अनुबंधित नाम, अध्याय 8, श्लोक 22 में पहला शब्द है। और एडम, मानवता, अध्याय 8 के श्लोक 31 में अंतिम शब्द है। तो, पहले ग्यारह स्टेक के अंत में और दूसरे ग्यारह स्टेक से पहले, ज्ञान, इस खंड में निर्माता, श्लोक 22 से 31 तक, रचनात्मक मध्यस्थ, कहता है, मैं श्लोक 27 में वहां था।

हमारे पास शुरुआत में यहोवा है, अंत में हमारे पास आदम है, और बीच में, हमारे पास ज्ञान है, मैं वहां भगवान और मानवता के बीच मध्यस्थ के रूप में था। मुझे लगता है कि इसके संकेतात्मक निहितार्थ हैं। नीतिवचन 9 नीतिवचन 8 में लेडी विज्डम के आकर्षक निमंत्रण का अनुसरण करता है, जिसमें उसकी और डेम फ़ॉली दोनों की ओर से अंतिम प्रस्ताव शामिल हैं।

ये प्रस्ताव पिछले अध्यायों में सावधानीपूर्वक तैयार की गई बातों के चरमोत्कर्ष तक पहुंचते हैं। अब, अध्याय 9, श्लोक 1 से 6 में, बुद्धि अपने घर में एक मेज पर जगह प्रदान करती है, जो पारिवारिक स्थिरता के चल रहे विषय से जुड़ा एक रूपक है। सात खंभे बताते हैं कि घर पूरी तरह से बना हुआ है, देखने में भी अच्छा है और सुरक्षित भी है।

संख्या सात इंगित करती है कि परिच्छेद के तत्व एक प्रतीकात्मक रजिस्टर में कार्य करते हैं। विज्डम की निर्माण परियोजना एक अनुबंधित समुदाय है जो दुनिया में भगवान का निवास बन जाएगा, ताकि अब वह केवल ऊंचे मंदिर से चिल्लाए नहीं, जैसा कि वह श्लोक 3 में करती है। वास्तव में, जैसा कि विलियम ब्राउन सुझाव देते हैं, लेडी विज्डम इन नीतिवचन घर में, मंदिर से

परे, शहर में और यहाँ तक कि घर में भी पवित्रता लाने का प्रबंधन करते हैं। यीशु मसीह में ईश्वर का अवतार, अंततः, हमारे रोजमर्रा के जीवन में ज्ञान की दिव्य कृपा की सीमा का उपयुक्त अवतार है।

लेडी विजडम नेक है, फिर भी वह व्यक्तिगत रूप से सरल लोगों को संबोधित करती है, और टेबल फेलोशिप उस अंतरंगता को दर्शाती है जिसमें भगवान उल्लेखनीय रूप से हम सभी को आमंत्रित करते हैं। इसके विपरीत, उपहास करने वाले, श्लोक 7-12 में व्यस्त रहते हुए, बस उस बुद्धिमान व्यक्ति का दुरुपयोग करते हैं जो उन्हें संबोधित करता है। अपेक्षित परिणाम, लंबी आयु या फिर कष्ट, इन दो प्रकार के लोगों का दो अलग-अलग रास्तों पर अनुसरण करते हैं।

मूर्खता श्लोक 13-18 में अपना प्रतिप्रस्ताव देती है। उसके पास भी एक घर है, और वह अपने सभी ऊँचे स्थानों से ज्ञान के निमंत्रण की नकल करती है, जैसा कि हम पुराने नियम के बाकी हिस्सों से जानते हैं, अक्सर भगवान के लोगों के मूर्तिपूजक प्रलोभन से जुड़े होते हैं। मूर्खता हर किसी के पीछे जाती है, यहां तक कि उनके पीछे भी जो अपना रास्ता सीधा बना रहे हैं, पद 15।

फ़ॉली भ्रामक है, अपने मृत मेहमानों को अपने घर के अंदर छिपाती है जबकि किनारे पर रहने के कामुक आनंद को उजागर करती है। वह निषिद्ध फल के लिए अपील करती है, इसलिए बोलने के लिए, आलस्य को छिपाने का प्रयास करती है क्योंकि उसने उचित भोजन नहीं बनाया है, और वह वास्तव में पद 14 के आसपास ही बैठी रहती है। जबकि ज्ञान स्वयं ही पुरस्कार का वादा कर सकता है, पद 11 में, मूर्खता विनाशकारी है ऋषि द्वारा श्लोक 18 में उसके लिए अंत का वर्णन किया गया है।

नीतिवचन 1-9 हमें ईश्वर और पड़ोसी के साथ संगति के आनंद का आनंद लेने के लिए आमंत्रित करता है, जो यहां यात्रा के चरमोत्कर्ष पर उत्सव के भोजन में सन्निहित है। अपने निर्माता से डरकर, हम वास्तव में फल-फूल सकते हैं, यह जानकर कि ब्रह्मांड और अनुबंधित समुदाय के साथ सद्भाव में कैसे रहना है। जैसा कि नीतिवचन 1 की चर्चा में सुझाया गया है, ऐसा पवित्र भय विकर्षित नहीं करता, बल्कि आकर्षित करता है।

नीतिवचन 9 में घरेलू रूपक अत्यंत उपयुक्त है। अंततः, भगवान हमें पारिवारिक उत्सव में आमंत्रित करते हैं। मेज़बान की महानता हमें भयभीत नहीं करती, बल्कि निमंत्रण पर विशेषाधिकार की गहरी भावना व्यक्त करती है।

मेज़ लग चुकी है और हम उसके घर के पास पैतृक पथ पर रहकर, दिव्य ज्ञान को अपनाकर उस परम दावत तक पहुँचेंगे।

यह डॉ. डैनियल जे. ट्रेयर ईसाई जीवन के लिए नीतिवचन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र संख्या 1, नीतिवचन 1-9, दो तरीके हैं।